B.A. - III
Paper - VI
Dr. Ashish Kumar Kundu.

Topic - 'Monarchy' (राजतंत्र)

राजतंत्र शब्द का अंग्रेजी रूप Monarchy दो शब्दों के योग से बना है, Monos जिसका अर्थ है एक और Archo जिसका अर्थ है तंत्र। इसलिए राजतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें राज्य का सर्वोच्च अधिकार एक व्यक्ति के हाथ में हो। शासन के सभी अंग उस व्यक्ति की निरंकुश तथा स्वतंत्र इच्छा के अधीन रहते हैं। उसके अधिकार असीमित हैं। यह व्यक्ति राजा (Monarch) कहलाता है। राजा शासन का सर्वेसर्वा है। राजा के वंशज ही उसके बाद उसके उत्तराधिकारी माने जाते हैं। राजगद्दी निर्वाचन के द्वारा या अपहरण के बल पर प्राप्त की जाती है। गेटेल ने कहा है कि सरकार का वह रूप जिसमें सर्वोपरि तथा अन्तिम सत्ता एक ही व्यक्ति के हाथ में हो राजतंत्र होगा, चाहे उस पद को उसने अपहरण, निर्वाचन या वंशानुक्रम उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त किया हो। वास्तव में, राजा की पदवी से कोई राज्य राजतांत्रिक नहीं होगा। जो शासन एक हाथ में हो और उस व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा स्थायी रूप से प्रभावशाली और शासन में अन्तिम रूप से निर्णायक हो तो वह राजतंत्र है। राजतंत्र प्राचीनतम शासन प्रणाली है।

आधुनिक युग में राजतंत्र के दो रूप हैं:—

(i) निरंकुश राजतंत्र (Absolute Monarchy)
(ii) वैधानिक राजतंत्र (Constitutional Monarch)

(i) निरंकुश राजतंत्र में सत्ता एक व्यक्ति के हाथ में रहती है और राजा कहलाता है। राजा की शक्ति या इच्छा पर कोई कानूनी बंधन नहीं है। राजतंत्र का आधार दैवी अधिकार सिद्धान्त माना जाता है। राज्य की उत्पत्ति के संबंध में एक प्राचीन सिद्धान्त है कि राज्य की सृष्टि ईश्वर ने की है, जिस प्रकार जगत की रचना ईश्वर ने की है, उसी प्रकार उसने राज्य का निर्माण किया है। चूँकि राज्य का सृष्टिकर्ता दैवी सत्ता है, अतः इस सिद्धान्त को दैवी सिद्धान्त कहा जाता है। इस सिद्धान्त की चर्चा प्रायः सभी धर्म ग्रन्थों में मिलती है जैसे बाइबिल, कुरान, महाभारत, मनुस्मृति, गीता आदि में। इन सभी धर्मों में राज्य को एक दैवी संस्था और राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है। मनुस्मृति के अनुसार राजा देवता का अवतार है। ईश्वर ने बाइबिल में दिया और राज्य की देखभाल के लिए अपने प्रतिनिधि के रूप में छोड़ दिया। अतः राजा को सभी अधिकार ईश्वर से प्राप्त हैं। वह मात्र ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है। वह कभी गलती नहीं करता किन्तु, राजा के कानून का पालन करना आवश्यक है। उनका उल्लंघन करना नैतिक दृष्टि से पाप है। राजा की सत्ता वंशागत है। फ्रांस में लुई चौदहवें का शासन तथा इंग्लैंड के स्टुअर्ट वंश का शासन इसके उदाहरण हैं।

कुछ विचारकों ने निरंकुश शासन-प्रणाली में कुछ गुणों का उल्लेख किया है, जैसे- शासन में एकरूपता, अन्य शासन प्रणालियों की तुलना में कम खर्चीला होना आदि, पर यह शासन-प्रणाली नैतिक दृष्टिकोण से दोषयुक्त है। इस प्रणाली में राजा को तो सम्पूर्ण अधिकार है पर उससे सम्बद्ध कर्तव्य नहीं है, यदि राजा की इच्छा पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं हो तो वह शासन अधिनायकवादी हो जाएगा।

(ii) वैधानिक राजतंत्र - जब राज्य की सर्वोच्च सत्ता एक व्यक्ति के हाथ में हो पर उस सत्ता का संचालन प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा हो तो उसे वैधानिक या सीमित राजतंत्र कहा जाता है। विधानतः सभी शक्तियाँ राजा में ही निहित रहती हैं पर व्यवहार में उनका प्रयोग जनता के प्रतिनिधियों के द्वारा होता है। उसी के नाम पर शासन का सब कार्य होता है पर वास्तविक शक्ति जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में रहती है। राजा की शक्तियाँ संविधान द्वारा प्रतिबन्धित तथा नियंत्रित रहती हैं। राजतंत्र का यह रूप गणतंत्र के बहुत समीप है। इंग्लैंड का वर्तमान शासन इसका उदाहरण है।

—×—